











## गीता अमृत

1। अथ त्र्योदशोऽव्याप्ता॥

संक्रमेत्रजयोत्तरेवमन्तरं जानक्षुषा॥

भूतप्रकृतिमोऽधं च ये विद्युतानि ते परम्॥ ३४॥

वहां से लोगों सांझा-माघम से जान करते हैं, तो खेड़ी मिक्काग करते हैं, स्थापन के साथ उन्होंने प्रार्थना के लिए उमेर निर्धारित कर्म आरक्षना का आधारण करते हैं। जो उनकी विधि नहीं जानते, वे तत्त्वज्ञित महापूरुष के द्वारा सुखर आचरण करते हैं। क्रमशः

## युगन्धिर (श्री गुण)

यहाँ तक कि अमात्य विष्णु भी इस बात का भी भान नहीं रहा कि कैसे प्रथा के अनुसार, द्वारिकासांसिंह के कुछ सन्देश के लिए स्वामी से प्रार्थना करें, औं स्थापन की ओर केवल देखो ही रह गए।

दूर मानसरोवर पर, तीक सुगोदय के श्वास निस प्रकार झल्पकलन की कली खिल उठती है, उमेर प्रवार विमी के निवेदन विधि बिना ही, हमारे स्वामी आसन से उमेर खड़े हुए हैं। इस समय वे बहुत ही कम बोले, परन्तु उमेर बोले, कह अविष्टमानी थी।

हाथ जोड़कर उन्हें स्वयंको प्रणाम किया। औं मुकुर मन के प्रासादिक प्रसन्नता उनके मन्द मुक्कान में खिल उठी, उनके निर्मल गलावी होटों के पीछे छिप गए। कुछ कलिकवा

जैसे दीनी-ज्ञान-भाव चमत्कर उठे बड़े बड़े बड़े हो गए।

ऐसा उमेर के कोलों पर खिलने वाला भीषण-

भर खिलकर खिल लिलीन हो गए। उनके नील पाल जैसे मुन्दरवाणी मुख्यमण्डल पर काँकी-कूपार ही दिखने वाली सुनहरी हास्य-छटा विचुर गयी। अपनी मधुर वेणुगांवी में उन्होंने कहा, द्वारिका के सेरे पिण्ठ बन्धु-भविनी। केवल इस सम्बोधन से ही अभिष्ठ दूर सुन्दरी तालिमीं पैदे हो रही। पश्चिम सान्ध के ज्वार की भौमिक प्रत्येक के मन में वात्सा के असीम आनन्द लहरा रहा। एक था द्वारिकविषय के लिए और दूसरा था, उनके सभी नर-नारियों की लिपि बन्धु-भविनी सम्बोधित करने का।

क्रमः  
श्री शिवाजी सावंत के विष्णुत उपन्यास से सामार।

## आपना लक्ष्य

## जलन दुरी नहीं, जलना दुरा है

कोमिका मास्टर

मैं कौतेज में था, पीजी डिस्ट्रोमा कर रही थी। जलास में एक लड़की पहुंची के मामले हम सबसे कहीं तेज और मेघावी थी। लेकिन वही कहीं थी—तीन महीने बाद थीरे—थीरे वह सबसे कटने लगी। इतना कि अपनी बहुत अच्छी दोस्त तक से उसने बात करनी चाह रही थी। उस दोस्त से जो भी बात करता, उसमें भी वह बात करना चाह रही थी। इस दौरान उसको ऐकड़ोमिक परफॉर्मेंस भी काफी गिर गई। कई-कई दिन तक जलास में नहीं आती थी, आती तो चुपचाप एक कोरों में बैठी रहती। बात करो तो चिढ़िचिङ्गा लगती। जो जितना पाले

जा रही थी, उसकी दोस्त उनी ही आगे बढ़ रही थी। पहाड़ में भी, टीचर्स और स्टूडेंट्स के बीच लोकप्रियता में भी।

कुछ तो जो भीतर ही भीतर उसे खा रहा था। जानते हैं क्या? जलन।

हाँ, जो जलन ही थी। बहकतास में सबसे अच्छी थी लोकिन स्मार्ट और बातचीत में तेज होने की बजासे अदेशन उसकी दोस्त को मिलता था।

यही बात अंदर ही अंदर उसे खाती रही थी। बाद में उसे मुद्र भी अहसास हुआ, पर तब तक देर हो चुकी थी।

जलन असल में उस चोर को तहाँ है जो चुपक से, बिन बताए मन में चुप बाती है और भीतर कुंडी लगाक बिठ जाती है। आप बेशक बाहर कितना ही पहरा लगा कर चैटे हों, एक बार इस चोर के मन में चुप जाने के बाद आप कुछ नहीं कर सकते। वह आपको अंदर से खोखला कर देता है। जलन वो जलता है जो किसी पैकेज जील वी

तरह हमें मिलता है और इसके साथ आते हैं डर, दुख, गुम्फ जैसे तमाम दूसरे जलताएँ। व्यक्तिगत को बनाने-बिनाने में इनका बड़ा हाथ होता है। कभी कोई जलता हम पर जाती होता है तो कभी कोई एसा ही जलता है जिसकी चीकीदारी करते रहना जरूरी है। चीकीदारी नहीं की तो यह सबसे ज्यादा नुकसान जलने वाले का ही करती है।

जलन बूरी नहीं, बशर्ते आप इसे दुष्प्राण के ज्वाया दोस्त बना सें। यह आपके लिए एक आइने की तरह होती है। देखना चाहें तो यह हमें हमारा वह भीतरी बेहोश दिखा सकती है जो अक्सर हम देख नहीं पाते। यह हमें बता सकती है कि कौन सी चीजें, रिश्ते या चर्चाएँ कहाँ करने लायक हैं लेकिन यह संकेत तभी बिल पाता है जब आप चौकटे हों, अपने अपने खाते करते हैं।

जलन को कमजोरी बनाने के बाब्य उसे ताकत बना लें तो कुछ रिश्तों की उम लंबी हो सकती है, कुछ उपलब्धियां समय पर मिल सकती हैं। जलन को अच्छा कोई भी हो, वह तब तक अच्छा बुरा नहीं होता, जब तक अनियन्त्रित न हो। तो जलता को अच्छा बुरा समझना लोडिंग, उन्हें गले लगाइए, जलने का हीमाला रखिए। सौंचिए, बम बल मत जड़ए।

## आज का राशिफल



दू थे ले ला लौ

तू ले लो आ

वृष्णि

इ द ए लो या

वी दू दे लो

सूनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध किया।

जल में जलनी विद्युतों के असर से। वाजनी दूध रही। अपने जल को प्रसिद्ध क



